श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

शिक्षा दर्पण

शिक्षा प्रभाग की त्रैमासिक समाचार पत्रिका
फरवरी - 2015
ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

1. शान्तिवन में आयोजित दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करती हुईं संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. हरीश शुक्ल तथा प्रो. राजेन्द्र माधव वाघ।

2. शान्तिवन में आयोजित एम.ओ.यू. कार्यक्रम को सम्बोधित करती हुईं संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी। साथ हैं (बाएं से दाएं की ओर)- कर्नाटक खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एम.जी. कृष्णनन, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. करूणा, ब्र.कु. हरीश शुक्ल तथा ब्र.कु. शिविका बहन।

परामर्श दाता

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर जी
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय जी
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू बहन जी
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग

प्रधान सम्पादक

राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग

सम्पादक मण्डल

ब्र.कु. सुन्दरलाल जी, हरिनगर, दिल्ली
ब्र.कु. प्रो. एम.के. कोहली, गुड़गाँव
डॉ. ब्र.कु. ममता शर्मा, मेहसाना

प्रकाशक

एज्युकेशन विंग (R.E. & R.F.)
एवं ब्रह्माकुमारीज़

प्रकाशन

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन, आबू रोड

डिजाइनिंग और टाइप सेटिंग

ब्र.कु. चुनेश
वैल्यू एज्युकेशन ऑफिस, शान्तिवन, आबू रोड

अमृत सूची

- **सम्पादकीय** : शिक्षक का कर्म - सत्कर्म
- विरल व्यक्तित्व - जगदीश चन्द्र हसीजा
  ईश्वरीय संदेश के शंखनाद के प्रमुख प्रहरी
- मूल्य शिक्षा से बनेगा श्रेष्ठ संस्कार
- आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा परिवर्तन की चुनौतियों का सामना
- मूल्य शिक्षा सिखाती है जीने की कला
- भ्राता निर्वैर जी का स्वर्णिम 77वाँ जन्मदिवस
- आध्यात्मिक मूल्यों से बनता है श्रेष्ठ जीवन
- अनेक बीमारियों की जड़ है चिंता और तनाव
- विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां
- शैक्षिक संस्थानों को मूल्यों का देवालय बनाता है मूल्य शिक्षा
- शिक्षा (Education) का दिव्य अर्थ
- **कविता**: खुदा के पास जाना है, खुदी को जानना होगा
- Be What You Are !
- मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम
- **Value Education And Spirituality**
  Brahma Kumaris Education Wing (RE & RF) offers through Collaboration

निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि वैल्यू एज्युकेशन सेंटर, आनंद भवन, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

E-mail: shikshadarpanhq@gmail.com
Mobile No.: +91 94276-38887 / +91 94140 -03961 / +91 94263-44040

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, सुखशान्ति भवन (अहमदाबाद)

सम्पादकीय

शिक्षक का कर्म - सत्कर्म

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

आदिकाल से शिक्षक प्रशिक्षण का कर्म करते आ रहे हैं। चाणक्य के शब्दों में, शिक्षक कभी साधारण नहीं होता। प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं। इन शब्दों में ही शिक्षक का कर्म स्पष्ट हो जाता है। माँ को भी अपने बच्चों का जीवन संवारने के लिए शिक्षक बनना ही पड़ता है। इसीलिए माँ को बच्चे का प्रथम शिक्षक माना गया है। परिवार, समाज और देश सभी की सीधी दृष्टि शिक्षक पर ही होती है जब कोई भी परिवर्तन का कार्य करना होता है। कोई ऐसा विचार जो समाज का परिवर्तन लाये वह शिक्षकों के माध्यम से ही प्रसारित किया जाता है। जब भी कोई उन्नत कार्य का प्रशिक्षण दिया जाता है तो शिक्षकों को ही सर्वप्रथम दिया जाता है। व्यक्ति या छात्र का सीधा व्यवहार शिक्षक से ही होता है। इसीलिए शिक्षक का कर्म हमेशा सत्कर्म माना जाता है। हर मनुष्य के अन्दर शान्ति व स्नेहपूर्ण वृत्ति और कर्म करने की क्षमता है। शिक्षक स्वतंत्र, रचनात्मक और अनुकूल वातावरण के साथ-साथ सुव्यवस्थित वातावरण बनाते हैं जिससे बच्चों और युवाओं में शान्ति, न्याय और विविधता को सम्मान देने की शक्ति का विकास होता है।

शिक्षक प्रणेता होते हैं

आज के युवाओं की समस्याओं को लेकर विश्वभर में शिक्षक को दोषी ठहराने वाले पत्र छप रहे हैं। परन्तु यह विचार शिक्षक के वास्तविक चरित्र से भिन्न है। कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों को विद्यालय में मेहनत करते हुए, छात्रों को प्रेरणा देते हुए तथा पढ़ाते हुए देखा जा सकता है। शिक्षक का वास्तविक स्वरुप वह है जो निरन्तर युवा और समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करता है फिर भी पिछले 20-30 वर्षों में छात्रों के दृष्टिकोणों तथा व्यवहारों में काफी अन्तर आया है। यह शिक्षकों के स्तर से नहीं आया है बल्कि उस व्यवस्था में अन्तर के कारण आया है जिसके अंतर्गत उसे विद्यालय में पढ़ाई के लिए भेजा जाता है।

वर्तमान समय भौतिकवाद तथा फिल्मों ने इस चुनौती को अधिक बढ़ावा दिया है। इन सबका परिवार पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज बच्चों का मनोरंजन परंपरागत साधन व चीजें नहीं रही। सांस्कृतिक चीजें एवं आध्यात्मिकता अब उन्हें पुरानी चीजों की तरह बेकार लगती है। आज अधिकांश लोग भौतिकवादी माध्यमों से खुशी प्राप्त करना चाहते हैं और सांसारिक कार्यों में अधिक व्यस्त होने की प्रवृत्ति तथा भागदौड़ के कारण अपने परिवार को कम समय दे पाते हैं।

वयस्कों पर फिल्मों की हिंसा का प्रभाव है। बच्चों की देखभाल में उपेक्षा की प्रवृत्ति बढ़ रही है जिससे वे अकेलापन और तनावग्रस्त होते जा रहे हैं। आज विद्यालय में प्रवेश होने वाले बच्चों का मानसिक विकास कम हो रहा है। बच्चों में परंपरागत रूप से मूल्यों का स्थानांतरण समाज तथा माता-पिता द्वारा ही होता है। परन्तु बच्चों में आ रहे मूल्यों में गिरावट के कारण शिक्षकों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण और उत्तरदायी हो जाती है। शिक्षक ही इस महान उत्तरदायित्व को निभा सकते हैं। समय की पुकार है कि शिक्षक इस मान्यता को समाज में प्रभावशाली ढंग से सामने लायें। तकनीकी ज्ञान और भौतिकता का ज्ञान ही केवल पर्याप्त नहीं है। शिक्षक के पास सार्वभौमिक मूल्यों के विकास को सरल बनाने तथा उन्हें अपनी संस्कृति को मूल्यों से जोड़ने की अद्‌भुत शक्ति है। इस शक्ति का प्रयोग करके समाज में मूल्यों की स्थापना करना शिक्षक का परम कर्तव्य है। शिक्षकों के द्वारा ही छोटी-छोटी जीवनोपयोगी बातों को बच्चे सीखते हैं। यदि माता-पिता भी बच्चों के उत्तम चरित्र निर्माण के लिए शिक्षकों के साथ कदम से कदम मिलाकर बच्चों की देखभाल करें तो अवश्य ही श्रेष्ठ परिणाम आयेगा। यदि नींव मजबूत होगी तो इमारत को श्रेष्ठ बनाने में मेहनत नहीं लगेगी। भले ही आज सभी को चारों तरफ निराशा के बादल दिखाई दे रहे हैं परन्तु समय एक जैसा कभी नहीं रहता। ये बादल भी बिखरेंगे ही। प्रत्येक युग में परम शक्ति द्वारा कुछ ऐसे कर्म कराये जाते हैं जो सुख और शान्ति के लिए, अंधकार दूर करने के लिए होते हैं। मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए किए जाते हैं। इस परम शक्ति के गुण और शक्तियों को धारण करने वाला इस समाज में एकमात्र शिक्षक ही है। इसीलिए परमात्म-शक्ति भी सर्वप्रथम शिक्षक बनकर ही ज्ञान को प्रसारित करती है। ज्ञान आरोपित होने पर ही हम शिक्षित होते हैं। यही कारण कि शिक्षक आज के भौतिकवादी वातावरण में भी पूज्यनीय, उच्च, श्रेष्ठ और चरित्रवान माना जाता है। शिक्षक को चाहिए कि वह अपने इस श्रेष्ठ चरित्र की गरिमा बनाये रखें। श्रेष्ठ कर्मों की दिशा में आगे बढ़ता रहे तभी शिक्षक का कर्म सत्कर्म कहलायेगा।

इस दिशा में शिक्षकों के लिए ही नहीं परन्तु सभी के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ऐसी नवीन योजनाओं को लागू किया जाता रहा है जो कि श्रेष्ठ कर्म के लिए मनुष्यात्माएं तत्पर होकर आगे बढ़ें। कहा जाता है कि विश्व में सात अरब जनसंख्या है। विश्व का एक-एक व्यक्ति यदि एक सत्कर्म करें तो पूरे विश्व में सत्कर्मों की बाढ़ आ जाएगी। बड़े-बड़े कार्य के लिए अक्सर लोग आगे बढ़ने से डरते हैं परन्तु छोटे-छोटे कार्यों के लिए न तो समय अधिक खर्च होता है, न धन और न ही शक्ति। इसीलिए ऐसे कार्यों से प्रारम्भ करें जिसमें हमारा कुछ भी नुकसान न हो और अधिक से अधिक लाभ हो। जैसे हम प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार से एक-दूसरे को सहयोग दें। किसी की भूल को क्षमा करें, आते-जाते सबको अपनी मुस्कराहट देकर खुशी फैलायें, बड़ों की इज्जत करें, सम्मान करें, छोटों की मदद करें। ऐसे कई छोटे-छोटे कर्म हैं। प्रतिदिन करने से हमारी आदत बन जाएंगे और हम ऐसे छोटे-छोटे सत्कर्मों से बड़े-बड़े महान कार्य कर सकेंगे। यही है वो योजना जिसे हम 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कहते हैं। यदि हम सब इसमें अपना छोटा सा सहयोग देंगे तो सोचिए हमारे एक छोटे सत्कर्म से कितने बड़े-बड़े कार्य सम्भव हो जाएंगे। सच मानिये, आप इसे करके देखें परिणाम आपको आंतरिक खुशी के रूप में मिलेगी। सकारात्मक वातावरण बनेगा। आप अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने लगेंगे और ऐसे सत्कर्मों के अनुभव से आप अपने आपको महान कार्य करने के लिए उत्प्रेरित होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

ब्र.कु. नीलम, पाटन

विरल व्यक्तित्व

जगदीश चन्द्र हसीजा

बाबा के मुख से संजय और गणेश के उपनाम से प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं- जगदीश भाईजी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ऐसे विरल व्यक्तित्व, जिन्होंने परमात्म-ज्ञान को गणेश बनकर अपनी लेखनी के माध्यम से विश्व में फैलाया।

हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू भाषा के ज्ञाता जगदीश भाई का जन्म 10 दिसम्बर, 1929 में ऋषि-मुनियों की भूमि (वर्तमान पाकिस्तान) मुल्तान शहर में हुआ था। आध्यात्मिकता में आपकी अनुपम रूचि थी। अपनी जिज्ञासा को तृप्त करने के लिए आपने भारतीय दर्शन, वैदिक संस्कृति और विश्व के विभिन्न धर्मों का गहन अध्ययन किया था। लगभग 15,000 से भी अधिक पुस्तकों का अध्ययन करते-करते परमात्मा की खोज के अभिलाषी हुए। आत्मानुभूति और परमात्म प्राप्ति उनके जीवन का लक्ष्य था। वे इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सत्संगों और धार्मिक सम्मेलनों में जाते थे। शास्त्रार्थ भी करते थे। अनेक महात्माओं, साधु-सन्तों से भी भेंट करते रहे। परमात्म-मिलन के सत्य मार्ग को ढूंढते रहे। व्यवसाय से वे प्रोफेसर थे। उनकी बुद्धि दूरांदेशी और तीव्र थी। वे हमेशा सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। जगदीश भाई के पिताजी गुरू गोविन्द सिंह के फॉलोअर थे। सन् 1952 में जगदीश भाई ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आये।

ईश्वरीय संदेश के शंखनाद के प्रमुख प्रहरी

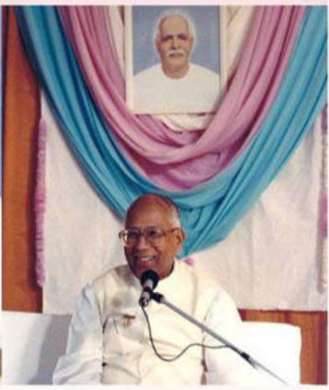

दिल्ली कमलानगर सेवाकेन्द्र में आपने ज्ञान लिया। संस्था का परिचय हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा के पवित्र एवं सादगीयुक्त जीवन से प्रभावित हुए। उन्हें ईश्वरीय ज्ञान एवं गहन आध्यात्मिकता की अनुभूति हुई, तब उन्होंने अपना जीवन मानव सेवा और ईश्वरीय सेवा में समर्पित किया। संस्था के महत्वपूर्ण पदों पर वे कार्यरत हुए। संस्था के प्रमुख प्रवक्ता के रूप में उन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया। बाबा हमेशा जगदीश भाई को कहते थे- आपकी बुद्धि 7 फुट लम्बी है।

बाबा ने एक बार ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षा और ज्ञान को संक्षेप में प्रकाशित करने के लिए कहा। बाबा ने कहा कि पुस्तक बहुत मोटी नहीं होनी चाहिए परन्तु जितना लिखो, उसमें ज्ञान का समस्त सार समाहित हो। उस समय न तो कोई ऑफिस एसिस्टेंट था, न टाइपराइटर, न ही टेबल-कुर्सी की सुविधा थी। फिर भी वे जमीन पर बैठकर कार्य करते थे। दो कमरों का मकान था जहाँ सत्संग भी होता था। एक कोने में बैठकर जगदीश भाई पुस्तकें लिखते थे। प्रथम पुस्तक लिखने के बाद बाबा का पत्र आया जिसमें लिखा था कि वहाँ जितनी बहनें रहती हैं उन्हें दिखाओ। एक बहन को दिखाया। उस बहन ने आधा काटकर कुछ सुधार किया। इस प्रकार एक-एक कर 12 बहनों ने उसमें सुधार किया। हुआ यूं कि लिखत से अधिक सुधार बढ़ गया। वे पुस्तक लेकर माउण्ट आबू पहुँचे, वहाँ लखनऊ के एक प्रोफेसर जो पार्लियामेण्ट के मेम्बर थे। एक ही कॉपी होने से उन्हें भी दिखाया। कुछ लोग कॉमेण्ट्स करते परन्तु जगदीश भाई धैयपूर्वक लिखते गए। बाद में बाबा ने मम्मा और विश्वकिशोर भाई को निमित्त बनाकर कहा कि मीटिंग करो और चेक करो पुस्तक छापना है या नहीं। किसी भाई ने विचार रखा कि पुस्तक के स्थान पर पर्चे छपाये जाए। आखिर पुस्तक के स्थान पर पर्चे छपाने वाली बात तय हुई। जगदीश भाई को कोई संकल्प नहीं चला। निराभिमानी बनकर बाबा से कहा कि बाबा मीटिंग में तय हुआ कि पर्चे छपाये जायें, तब बाबा ने बड़े प्यार से जगदीश भाई को कहा कि जाओ पुस्तक ही छापने के लिए दे दो और आज के बाद कुछ भी लिखो तो किसी को भी दिखाने की आवश्यकता नहीं है। बाबा को भी नहीं। भगवान का वरदान मिल गया। जगदीश भाई ने सोचा- धीरज की परीक्षा हुई। उन्हें बहुत खुशी हुई तब से उन्होंने मन में ठान लिया कि मैं तो कलम-कागज लेकर बैठूँगा और जो भी परमात्मा लिखाएगा वह लिखूंगा। प्रभु ने जिम्मेवारी दे दी।

जब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय भरतपुर के राजा की ब्रजकोठी में था, तब बाबा ने एक बार रात्रि क्लास में कहा कि भारत के राष्ट्रपति को पत्र लिखना है। अंग्रेजी और हिन्दीं में, कौन लिखेगा? वहाँ 5-6 भाई भी थे। कोई ऑफिसर, तो कोई युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर थे। सभी ने सोचा लिखेंगे। उस रात्रि को लाईट नहीं थी, बैटरी चालू की परन्तु उसमें सेल नहीं थे। ठण्डी का समय था। जगदीश भाई ने स्ट्रीट लाईट के नीचे बैठकर पत्र तैयार किया। रूम में ठहरे भाई उनकी हँसी उड़ाने लगे कि कल तो पिकनिक पर जाना है। बाबा ने पूछा कि किसने पत्र लिखा है? सबने कहा कि जगदीश भाई ने लिखा है। बाबा ने संस्था का समग्र साहित्य लिखने की अथॉरिटी जगदीश भाई को दे दी।

जगदीश भाई ने परमात्म-ज्ञान को सच्चे रूप में समझकर 500 से अधिक पुस्तकें लिखकर अनेक आत्माओं को अपनी लेखनी से ईश्वरीय संदेश दिया है। वे परमात्म-ज्ञान को दुनिया के सामने रखने के लिए अंगद के समान सदा अडिग रहे।

बहनों और माताओं के लिए उनके हृदय में श्रद्धा का भाव था। यज्ञ में बहनों और माताओं की रक्षा के लिए उन्होंने मार भी खाई। प्रताड़ना भी मिली परन्तु खुशी से सब सहन किया। परमात्म-ज्ञान को दुनिया के सामने रखने के लिए कठिनाई का सामना भी किया। हिम्मत और परमात्मा में निश्चय रखकर अंगद के समान अडिग रहकर कार्य किया। नाम, मान और शान से सदा मुक्त रहे। एक्यूरेट, अलर्ट और एक्टिव बनकर सेवा की। छोटी बहनों को भी खूब प्रेरणा देते थे। उस समय कमलानगर सेण्टर बहुत छोटा था, स्नान इत्यादि की व्यवस्था कठिन थी तब वे जमुना नदी में जाकर स्नान करते थे।

मुझे याद है कि कि जब मैं पाण्डव भवन दिल्ली सेवाकेन्द्र पर थी तब वे क्लास कराने आते थे। हम बहनों के साथ भी प्रेम से ज्ञान चर्चा करते थे। उनकी अनेक विशेषताएं आज भी याद आती हैं। उनकी प्रेरणा से अनेकों के जीवन का पथ-प्रदर्शन होता रहा है। ऐसी महान विभूति को शत्-शत् नमन।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के शिक्षा प्रभाग और कर्नाटक खुला विश्वविद्यालय के बीच समझौता (एम.ओ.यू.) किया गया है। इसके तहत अब कर्नाटक खुला विश्वविद्यालय में भी मूल्य आधारित डिप्लोमा, डिग्री तथा अन्य कई पाठ्यक्रम चलाये जाएंगे।

शिक्षा प्रभाग का एक और सफल प्रयास...

मूल्य शिक्षा से बनेगा श्रेष्ठ संस्कार

शान्तिवन (आबू रोड)। आज प्रत्येक युवाओं को मूल्य शिक्षा और श्रेष्ठ संस्कार देने की आवश्यकता है। वर्तमान युवाओं के अंदर ज्ञान है परन्तु आध्यात्मिक मूल्यों एवं आदर्श ज्ञान का अभाव होता जा रहा है। इससे संस्कारविहीन मनुष्य का जीवन एक पशु के समान हो जाता है। मूल्य आधारित शिक्षा से युवाओं में श्रेष्ठ संस्कार बनेंगे।

उक्त उद्‌गार कर्नाटक खुला विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. एम.जी. कृष्णनन** के हैं, जो 26 दिसम्बर, 2015 को कर्नाटक खुला विश्वविद्यालय और ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के संयुक्त तत्वाधान में मूल्य आधारित शिक्षा पाठ्यक्रम के एम.ओ.यू. के दौरान उपस्थित गणमान्य नागरिकों को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का ज्ञान सभी धर्मों व सम्प्रदायों से भिन्न है। आध्यात्मिकता का पाठ हर मनुष्य के लिए आवश्यक है इसलिए यह समझौता किया गया है।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका **दादी रतनमोहिनी** ने कहा कि इस सृष्टि पर एक समय ऐसा भी था जब मानव मूल्यों से सम्पन्न था। आज हमें अपने जीवन में भी उन्हीं मूल्यों को शामिल करने की आवश्यकता है तभी हमारा जीवन सुखमय हो पाएगा। मूल्यों से सम्पन्न व्यक्ति ही भारत को विश्व गुरू का दर्जा पुन: दिलाएगा और भारत सोने की चिड़िया कहलाएगा। जीवन में उन्हीं मूल्यों को धारण करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा यह वैल्यूज़ एज्युकेशन का कोर्स प्रारम्भ किया गया है।

शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष **ब्र.कु. मृत्युंजय** ने कहा कि युवाओं में सकारात्मक परिवर्तन के लिए मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा आवश्यक है। मूल्य शिक्षा से ही समाज की दिशा और दशा में परिवर्तन ला सकते हैं तथा नैतिक, मानवीय और चारित्रिक शिक्षा से जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं।

संस्था के प्रवक्ता **ब्र.कु. करूणा** ने कहा कि यह शिक्षा समाज में एक नई चेतना का संचार करेगी और मानव को मूल्यों के प्रति आकर्षित करेगी। कई विश्वविद्यालयों में यह शिक्षा दी जा रही है जिससे बड़ी संख्या में युवाओं में इसके प्रति रूझान है।

इस कार्यक्रम को मैसूर सब-ज़ोनल की प्रभारी **ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. पांड्यामणि, ब्र.कु. हरीश शुक्ल** और **ब्र.कु. रंगनाथ** ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया गया। शान्तिवन के मधुर वाणी ग्रुप ने मूल्य आधारित स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का सफल संचालन **ब्र.कु. शिविका बहन** ने किया।

ब्र.कु. मृत्युंजय
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा परिवर्तन की चुनौतियों का सामना

संसार और मनुष्य के जीवन का प्रत्येक क्षण परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरता रहता है। परिवर्तन जीवन में अनुकूल भी होते हैं और कई बार प्रतिकूल भी। अनुकूल परिवर्तन होने पर हरेक व्यक्ति मुस्कराता है परन्तु जीवन में आशा के प्रतिकूल घटित होने पर मनुष्य हताशा, निराशा, तनाव, कुण्ठा, अवसाद इत्यादि से गुजरकर अपने जीवन की ऊर्जा-शक्ति नष्ट करने लगता है। आध्यात्मिक शिक्षा इस सत्य का रहस्योद्घाटन करती है कि हमारे जीवन में कुछ भी अकारण घटित नहीं होता है। जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा है उसके उत्तरदायी अतीत या वर्तमान में किए गए हमारे ही कर्म हैं। इस प्रकार के ज्ञान से जीवन में होने वाले परिवर्तनों एवं आने वाली चुनौतियों का मानसिक दृढ़ता के साथ सामना करने की शक्ति हमारे अन्दर आती है। वर्तमान समय में ग्लोबल वार्मिंग, तकनीकी परिवर्तन, सांस्कृतिक परिवर्तन तथा अन्य सभी प्रकार के परिवर्तन के लिए मनुष्य स्वयं उत्तरदायी है। इससे मनुष्य के अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न हो गया है।

> मानव जीवन और समाज अनेक प्रकार के परिवर्तन के संक्रमण काल से गुजर रहा है। प्रौद्योगिकी आविष्कारों द्वारा अनेक मानवीय मूल्य जीवन की मुख्यधारा से बाहर हो गए हैं और उनके स्थान को अल्पकालिक भौतिक मूल्यों ने ले लिया है जबकि पुरानी पीढ़ी के संस्कार परम्परागत भारतीय मूल्यों के संस्कार से अभिसिंचित है। इस प्रकार मूल्यों के संघर्ष द्वारा विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इससे अनेक प्रकार की नई शारीरिक, मानसिक, भौतिक और मनोवैज्ञानिक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। केवल आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की मनोवृत्तियों में परिवर्तन करके उसे जागरुक बनाया जा सकता है।

धरती के बढ़ते तापमान के कारण सम्पूर्ण विश्व का 'पारिस्थिकी तन्त्र' असन्तुलित हो गया है। विगत कई वर्षों से विश्व को अनेक विनाशकारी समुद्री चक्रवातों एवं सुनामी लहरों के कहर का सामना करना पड़ रहा है और इनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इसी प्रकार अनेक स्थानों पर आश्चर्यजनक ढंग से चलने वाली ताप-लहर और ठण्डी ने वैज्ञानिकों को आश्चर्यचकित किया है। उपर्युक्त समस्याओं का मूल कारण मनुष्य की असीम लोभवृत्ति है। अधिक से अधिक धन का संग्रह करने के लिए वह प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट कर रहा है। वास्तव में, पर्यावरण की सुरक्षा में ही मनुष्य का भविष्य सुरक्षित है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा मानवता के लिए संकट उत्पन्न करने वाले इन परिवर्तनों एवं चुनौतियों का सामना करने के लिए **'मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनायें'** तथा **'मूल्य एवं अध्यात्म द्वारा सशक्तिकरण'** वृहद् कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया है। मनुष्य के विचारों का परिष्कार करना आवश्यक है, क्योंकि लोभवृत्ति के कारण ही जंगलों की अंधाधुंध कटाई करने से ही पर्यावरण सम्बन्धी सभी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। सभी प्रकार की समस्याओं का मूल कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार नामक पाँच मनोविकार हैं। आध्यात्मिक शिक्षा से स्व-सशक्तिकरण होता है तथा मन, निर्मल बनता है और मनुष्य सर्व प्रकार की समस्याओं और परिवर्तन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में समर्थ हो जाता है।

आज देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व को मूल्यों की शिक्षा देने की आवश्यकता है। मूल्यों के अभाव में ही विश्व में अशान्ति व अस्थिरता है जिसे यही शिक्षा एक सूत्र में बांध सकती है।

मूल्य शिक्षा सिखाती है जीने की कला

शान्तिवन (आबू रोड)। शिक्षा का अर्थ सिर्फ नौकरी प्राप्त करना नहीं है बल्कि जीवन जीने की कला सीखना है। प्राचीन समय में जो भी महापुरुष थे, उनका जीवन मूल्यों से सम्पन्न था। उक्त उद्‌गार अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के डायरेक्टर **डॉ. आर.एम. चंद्रशेखरन** ने व्यक्त किए।

यह दीक्षांत समारोह 21 नवम्बर, 2015 को मूल्य शिक्षा व अध्यात्म में पी.जी. डिप्लोमा और एम.बी.ए. पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण लगभग 700 विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान करने हेतु अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु, यशवंत राव चव्हाण महाराष्ट्र खुला विश्वविद्यालय, नासिक तथा ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के संयुक्त तत्वाधान में शान्तिवन परिसर में आयोजित किया गया।

ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष **ब्र.कु. मृत्युंजय** ने कहा कि हम केवल डिग्री ही नहीं देते बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। मूल्य शिक्षा से व्यक्ति का जीवन श्रेष्ठ बनता है और उनमें दिव्यता आती है।

संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका **दादी हृदयमोहिनी** ने कहा कि मूल्य शिक्षा हमें सिर्फ शिक्षित ही नहीं बनाती बल्कि दूसरों को सम्मान देना भी सिखाती है। उन्होंने इस शिक्षा को स्कूल और कॉलेजों में भी शुरू करने की प्रेरणा दी।

संस्था की संयुक्त मुख्य संचालिका **दादी रतनमोहिनी** ने कहा कि आध्यात्मिक शिक्षा का अर्थ है- चरित्र का विकास होना। आज यह शिक्षा मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इस शिक्षा से ही सतयुगी दुनिया की स्थापना होनी है।

संस्था के महासचिव **ब्र.कु. निर्वैर** ने कहा कि वर्तमान शिक्षा पद्धति से व्यक्ति का मानसिक स्तर तो ऊपर उठ गया है लेकिन उसका चरित्र दिन-प्रतिदिन नीचे गिरता जा रहा है। इसलिए मूल्य शिक्षा सभी जगह आवश्यक है।

ब्र.कु. पांड्यामणि ने कहा कि मूल्य शिक्षा में डिप्लोमा, पी.जी. डिप्लोमा तथा एम.बी.ए. कोर्स शुरू किया गया है जिसमें अभी तक लगभग 6-7 हजार विद्यार्थियों ने मूल्य शिक्षा

से लाभ प्राप्त किया है। इसके एम.बी.ए. पाठ्यक्रम में लगभग 1500 विद्यार्थियों ने डिग्री प्राप्त की है। अभी तक 7 विश्वविद्यालयों ने ब्रह्माकुमारीज़ के साथ एम.ओ.यू. किया है जो इस पाठ्यक्रम को चलाने के निमित्त बने हैं।

यशवंत राव चव्हाण विश्वविद्यालय, नासिक के को-आर्डिनेटर **प्रो. राजेंद्र माधव वाघ** ने सभी विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र मिलने पर बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर डॉ. आर.एम. चंद्रशेखरन ने दादी जी को मोमेण्टो प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र व मैडल दिया गया। दीक्षांत समारोह से पूर्व पूरे भारतवर्ष से आये हुए सभी विद्यार्थियों ने 'मूल्य निष्ठ शिक्षा एवं आध्यात्मिकता' का संदेश देने के लिए एक भव्य रैली निकाली। कार्यक्रम का संचालन **ब्र.कु. ममता बहन** ने किया।

भ्राता निर्वैर जी का स्वर्णिम 77वाँ जन्मदिवस

शिक्षा प्रभाग के सदस्यों द्वारा भ्राता ब्र.कु. निर्वैर जी के स्वर्णिम 77 वाँ जन्मदिवस धूमधाम से मनाया गया। दादी हृदयमोहिनी और दादी रतनमोहिनी ने भ्राता जी को स्मृति चिह्न प्रदान किया। ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु. पांड्यामणि और डॉ. आर.पी. गुप्ता ने भ्राता जी को अभिनंदन पत्र प्रदान किया। ब्र.कु. शिविका बहन ने अभिनंदन पत्र पढ़कर सुनाया जबकि ब्र.कु. वेद गुल्यानी और ब्र.कु. श्वेता बहन ने कविता सुनाई। इस अवसर पर केक कटिंग भी किया गया।

डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, शान्तिवन

आध्यात्मिक मूल्यों से बनता है श्रेष्ठ जीवन

प्रत्येक विद्यार्थी के अंदर आध्यात्मिक मूल्यों का होना आवश्यक है। यह आध्यात्मिक मूल्य हमें सच्चे मार्गदर्शक की तरह जीवन के प्रत्येक मोड़ पर सदा मार्गदर्शन करते हैं।

जीवन का मार्गदर्शन करने में सहायक है आध्यात्मिक शिक्षा

विद्यार्थी का उद्देश्य ज्ञान का अर्जन करना होता है। विभिन्न विषयों के अर्जित ज्ञान से ही उसकी पहचान होती है। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी में ज्ञान के साथ-साथ उसके अन्दर श्रेष्ठ मानसिक गुणों एवं मानवीय मूल्यों का होना आवश्यक है। परन्तु विद्यार्थियों का जिज्ञासु एवं कोमल मन संसार की अनेक आकर्षक बुराइयों की ओर आकर्षित हो जाता है। इससे वे अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं एवं नशीले पदार्थों के सेवन का शिकार हो जाते हैं। जीवन के सबसे ऊर्जावान और कीमती समय को नष्ट कर देते हैं। आध्यात्मिक एवं मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन का मार्गदर्शन करके जीवन की मंजिल को सहज बनाती है।

आदर्श विद्यार्थी का पहला लक्षण है कि उसे सदा लक्ष्य को निर्धारित करके ही आगे बढ़ना चाहिए। लक्ष्यविहीन शिक्षा प्राप्त करना अनियन्त्रित घोड़े के समान है जो केवल दौड़ता तो रहता है परन्तु उसकी कोई दिशा नहीं होती है। परिस्थितियां तो स्वाभाविक रूप से प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आती हैं परन्तु मानसिक दृढ़तापूर्वक उनका सामना करते हुए लक्ष्य की ओर सदा गतिमान रहना चाहिए। आत्मबल और मानसिक दृढ़ता के आगे सभी समस्याएं और परिस्थितियां हार जाती हैं। विद्यार्थियों में सदैव स्वयं सीखने की प्रवृत्ति आवश्यक है। इससे जीवन में अनुभव बढ़ता है। शिक्षकों, माता-पिता एवं अन्य बड़े लोगों का सम्मान करना चाहिए। इससे उन्हें बड़ों का आशीर्वाद और स्नेह प्राप्त होता है जिससे उनकी मंजिल आसान होती है। विद्यार्थियों में सृजनशीलता का गुण होने से सदा ज्ञान के नये-नये अनुभव होते हैं। विषय को रटने के बजाय अपने ढंग से प्रस्तुत करने की सृजन शक्ति से नई वस्तुओं के निर्माण और अनुसंधान करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

प्रत्येक विद्यार्थी के अंदर आध्यात्मिक गुणों एवं मूल्यों का होना आवश्यक है। आध्यात्मिक गुण जैसे शान्ति, प्रेम, पवित्रता, सत्यता इत्यादि सच्चे मार्गदर्शक की तरह जीवन के प्रत्येक मोड़ पर सदा मार्गदर्शन करते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान से मन और बुद्धि पर आन्तरिक अनुशासन स्थापित होता है। विद्यार्थियों को नकारात्मक और व्यर्थ चिन्तन से सदा दूर रहना चाहिए क्योंकि नकारात्मक चिन्तन के कारण उत्पन्न मानसिक तनाव से मुक्त होने के लिए धीरे-धीरे मादक द्रव्यों के सेवन की आदत पड़ जाती है जिसकी जीवन में भारी कीमत चुकानी पड़ती है। बाल्यकाल से ही विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा देनी चाहिए जिससे वे कम आयु में ही ईमानदारी, सत्यता, आज्ञाकारिता जैसे मूल्यों को अपनाकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सके। उन्हें सदा संगदोष के प्रभाव से दूर रखना चाहिए। विशेषकर खान-पान की शुद्धि आवश्यक है क्योंकि कहा जाता है, 'जैसा अन्न, वैसा मन।' आचार, विचार और व्यवहार से भी हम बच्चों में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। आध्यात्मिक शिक्षा से विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास का विकास होता है, दृढ़ इच्छाशक्ति और एकाग्रता बढ़ती है और यही सर्व सफलता प्राप्त करने का मूलमन्त्र है।

ब्र.कु. चुनेश, शान्तिवन

चिंता से मुक्त होने का एकमात्र तरीका है, 'वर्तमान में जीना सीखें।' नकारात्मक भविष्य एवं अपनी पीड़ादायी अतीत के बारे में न सोचें बल्कि अपने वर्तमान समय पर ध्यान केन्द्रित करें।

अनेक बीमारियों की जड़ है चिंता और तनाव

आज पूरे विश्व में तीव्र गति से नैतिक, मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। विशेषकर युवावर्ग व्यसन और फैशन की अंतहीन जाल में फंसकर अपनी प्राचीन पुरातन संस्कृति को भूल गया है और वे पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहा है जिससे युवा अनेकानेक मानसिक रोगों से ग्रसित हो गया है जिसमें चिंता, भय, तनाव और अनिद्रा प्रमुख है।

कहा जाता है- 'चिंता चिता के समान है।' यह बहुत बुरी आदत है। यदि किसी मनुष्य के अंदर यह बुराई हो तो वे जीवनपर्यंत दु:खी, अशान्त और निराश रहता है। चिंता अंदर से उसे खोखला कर देती है। अधिकतर लोग यह मानते भी हैं कि चिंता करने से हमारे समय और शक्तियों का ह्रास होता है। इसके बावजूद भी वे चिंता से मुक्त नहीं हो पाते और इसी गंदी आदत के कारण जीवनभर अवसादग्रस्त रहते हैं। हमें चिंता से मुक्त होकर वर्तमान में जीना चाहिए क्योंकि चिंता और तनाव अनेक रोगों की जड़ है।

बाल्यकाल से ही माता-पिता अपने बच्चों में यह संस्कार डालते हैं कि उन्हें अपनों की और आसपास की चीजों की चिंता करनी चाहिए। परन्तु यदि हम एकांत में बैठकर सोचें तो हमें ज्ञात होगा कि चिंता हमारे अंदर तनाव और डर की भावना उत्पन्न करती है जबकि दूसरों की देखभाल करना हमारे अंदर प्यार की भावना उत्पन्न करती है। आपसी स्नेह, प्रेम और सौहार्द्र से सम्बन्धों में मधुरता आती है।

कई बार हम दूसरों के प्रति भी चिंतित हो जाते हैं। परन्तु वास्तव में हम स्वयं के लिए ही चिंता करते हैं, न कि दूसरों के लिए। इसका मूलभूत

कारण है- असुरक्षा की भावना, जो अंदर ही अंदर हमें परेशान करती रहती है। उससे मुक्त होने के लिए हम चिंता का माध्यम अपनाते हैं। लेकिन यह स्वयं को धोखे में रखने जैसा है। इससे हमें बचकर रहना चाहिए।

वर्तमान समय बुरी खबरों को पढ़ने तथा खराब फिल्मों को देखने से हमारे अंदर भय और तनाव की भावना आती है। हमें प्रत्येक क्षण लगता है कि कहीं आज मेरे साथ अप्रिय घटना तो नहीं घटेगी? कुछ बुरा तो नहीं होगा? ऐसी मन:स्थिति में लोगों को जीवन व्यतीत करना कठिन लगता है। क्या ऐसी स्थिति में असुरक्षा की भावना से बाहर निकला जा सकता है? अवश्य ही बाहर निकला जा सकता है। कहा जाता है, 'जहाँ चाह है, वहाँ राह है।' अत: चिंता से मुक्त होने का एकमात्र तरीका है, 'वर्तमान में जीना सीखें।' नकारात्मक भविष्य एवं अपनी पीड़ादायी अतीत के बारे में न सोचें बल्कि अपने वर्तमान समय पर ध्यान केन्द्रित करें। दूसरों के प्रति श्रेष्ठ भावना रखकर ही हम अपने लिए भी कल्याणकारी स्थितियां निर्मित कर सकते हैं। इससे हमारे अंदर दूसरों के प्रति प्रेम और परोपकार की भावना बढ़ती है और हमारी आंतरिक स्थिति भी शक्तिशाली बन जाती है।

जब हम आंतरिक रूप से शक्तिशाली होते हैं, तो बाह्य परिस्थितियां कमजोर हो जाती हैं जिससे पहाड़ जैसी समस्याएं भी रूई बन जाती है। इसलिए सदा चिंता या भय से मुक्त होकर वर्तमान समय का आनंद लें। अपने आज के बारे में सोचें और सदैव दूसरों के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखें ताकि उनका जीवन भी सुखमय और प्रकाशमय बन सकें। यही जीवन जीने की कला है।

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

जयपुर (राजस्थान)

बैंगलुरू (कर्नाटक)

काठमाण्डू (नेपाल)

शान्तिवन (राजस्थान)

पुणे (महाराष्ट्र)

नासिक (महाराष्ट्र)

रेवा (मध्य प्रदेश)

परभनी (महाराष्ट्र)

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

जयपुर (राजस्थान)

शान्तिवन (राजस्थान)

पंढरपुर (महाराष्ट्र)

शान्तिवन (राजस्थान)

अकोला (महाराष्ट्र)

वर्शी (महाराष्ट्र)

वोपोदी (महाराष्ट्र)

विशाखापटनम् (आंध्र)

डॉ. ब्र.कु. हरीन्द्र, वाराणसी

शैक्षिक संस्थानों को मूल्यों का देवालय बनाता है मूल्य शिक्षा

शिक्षा का उद्देश्य यदि श्रेष्ठतम व्यक्तित्व का निर्माण करना है तो वर्तमान समय में शिक्षा की दिशा और दशा शैक्षिक जगत की एक चिन्ताजनक तस्वीर प्रस्तुत करती है। शैक्षिक संस्थानों और विद्यालयों में अध्ययन करने वाले शिक्षार्थियों की मानवीय और नैतिक मूल्यों में निरन्तर घटती जा रही रूचि के अभाव में उत्पन्न व्यक्तित्व सम्बन्धी विसंगतियां उपयुक्त तथ्य को स्पष्ट प्रभावित करती हैं। कभी शिक्षा जगत की शान और पहचान रहे शैक्षणिक संस्थानों की घटती जा रही शैक्षिक उत्कृष्टता वर्तमान शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के एक नये सिरे से मूल्यांकन करने की मांग करती है। हमारी शिक्षा प्रणाली समाज में निरन्तर हो रहे परिवर्तन और आवश्यकता की मांग के अनुसार शिक्षक, इंजीनियर, चिकित्सक एवं कर्मचारियों को तैयार कर रही है परन्तु उनकी उद्यमशीलता और कार्यक्षेत्र की प्रतिबद्धता को लेकर समाज में प्रश्न उठाये जा रहे हैं। कभी मूल्यों का पाठ पढ़ाने के लिए पहचाने जाने वाले शिक्षक आये दिन नकारात्मक समाचार के रूप में सुर्खियां बटोर रहे हैं। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि योग्य एवं चरित्रवान शिक्षक संग्रहालयों में रखी गई ऐतिहासिक वस्तुओं जैसे इतिहास की वस्तु बन गये हैं। आज भी शिक्षकों का शालीन व्यवहार, नैतिक सिद्धान्तों के प्रति समर्पण भाव, व्यक्तिगत मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता तथा कर्मठता किसी विचलित विद्यार्थी के मन और मस्तिष्क में नई ऊर्जा और चेतना का संचार करके कर्तव्यबोध का पाठ पढ़ाती है। जीवन के प्रेरक प्रसंग जीवन के उद्देश्य को सार्थक गतिज ऊर्जा प्रदान करते हैं परन्तु आज सबसे बड़ी चुनौती प्रेरक व्यक्तित्व सम्पन्न शिक्षकों के निर्माण की हमारे शिक्षा जगत के समक्ष है। इस चुनौती का सामना करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स के पाठ्यक्रम और अवधि में बदलाव किया जा रहा है। अब बी.एड. का कोर्स दो वर्ष या इन्टर के बाद सीधे पंचवर्षीय शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स लागू किया जा रहा है परन्तु योग्य एवं प्रेरक व्यक्तित्व सम्पन्न शिक्षकों के निर्माण की चुनौती दे रही है। वास्तव में, शिक्षा एक मानसिक प्रक्रिया है और यह चेतना के सूक्ष्म स्तर पर घटित होती है। इसलिए समस्त शैक्षिक जगत की समस्याओं का कारण और निवारण मानसिक स्तर पर ही सम्भव है। शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए बाह्य कारकों जैसे पाठ्यक्रम के स्वरूप और अवधि में परिवर्तन, शैक्षिक दण्ड और पुरस्कार तथा परिस्थितियों को बदल करके समाधान खोजना तो जैसे पानी पर लकीर खीचना ही है। यह तो जैसे समस्या का वास्तविक कारण का समाधान न करके मात्र बीमारी के बाह्य लक्षणों के आधार पर बीमारी को कुछ समय के लिए परिदृश्य से गायब कर देना है।

21वीं सदी के सशक्त भारत के नवनिर्माण अथवा भारत को पुन: विश्व गुरू जैसे सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए केवल कम्प्यूटरीकृत फैक्ट्री में तीव्र गति से गुणवक्तायुक्त वस्तुओं का उत्पादन ही पर्याप्त नहीं है। हमारा वर्तमान संसार भौतिक वस्तुओं के उत्पादन से सम्पन्न हो रहा है परन्तु समाज और संसार की व्यवस्था को संचालित करने वाला मानव मन मनोविकारों के दुष्चक्र में फँसकर स्वयं समस्याओं का उत्पादन करने की फैक्ट्री बनता जा रहा हैं। व्हाट्स-एप पर 'पॉजीटिव थिंकिंग' का मैसेज भेजने वाले 'व्हाट्स-एप गुरू' समस्याओं के आने पर 'पॉजीटिव थिंकिंग' का पाठ भूलकर 'नेगेटिव थिंकिंग के साइड इफेक्ट' से संक्रमित होकर मन का रोना रोने लगते हैं। जब मानवीय संसाधन ही बेहतर नहीं होगा तो उससे उत्पादन कैसे बेहतर होगा? एक स्वार्थी, लालची, क्रोधी और अशान्त मानव मन से हम कैसे एक प्रेरक मूल्यों का पाठ पढ़ाने वाले शिक्षक की आशा कर सकते हैं? हमारे शिक्षक नीति-निर्माताओं को यह समझने की बात है और यही वह सबसे महत्वपूर्ण बात है जिसकी हमारे वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में सबसे अधिक उपेक्षा हो रही है?

शिक्षार्थियों के अत्यन्त कोमल और संवेदनशील मन को प्रशिक्षित करने वाले मूल पाठ ही हमारे पाठ्यक्रम से गायब हैं, तो यह समझना आसान है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा के अभाव में समस्या सदैव समस्या ही बनी रहेगी परन्तु वर्तमान शैक्षिक

आत्म-अनुभूति ही मनुष्य के जीवन में सकारात्मक चिन्तन और कर्म की आधार शिला है। सकारात्मक कर्म से जीवन का फाउण्डेशन जितना अधिक मजबूत होगा उतना ही अधिक मनुष्य के स्वर्णिम भविष्य का नवनिर्माण होगा। मूल्य शिक्षा से सकारात्मक सोच और कर्म करने वाले मनुष्यों का नवनिर्माण करना सम्भव है।

समस्याओं से जूझते परिदृश्य में आशा की किरण यह है कि राजयोग शिक्षा और शोध संस्थान के शिक्षा प्रभाग ने इस दिशा में एक सार्थक पहल प्रारम्भ कर दिया है।

भारत में मूल्य शिक्षा धार्मिक शिक्षा से भिन्न न समझने के कारण शिक्षाशास्त्रियों, बुद्धिजीवियों और राजनीतिज्ञों में लम्बे समय से इनके प्रति संशय बना हुआ है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना अत्यन्त आवश्यक है कि धार्मिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा दो अलग-अलग आयाम है। धार्मिक शिक्षा मनुष्य को सत्य, प्रेम और शान्ति का पाठ तो पढ़ाती है परन्तु अन्ततः मनुष्य को संकीर्ण धार्मिक बन्धनों में बांध देती है। इसी कारण से मनुष्य और मनुष्यता के बीच में धार्मिक विचारों की संकीर्ण दीवार खड़ी हो जाती है जो मानव को महामानव बनने के पथ में अवरोधक बन जाती है। जबकि मूल्य शिक्षा अथवा आध्यात्मिक शिक्षा प्रत्येक मनुष्य को चेतना के अनन्त आकाश में स्वतन्त्र विचरण करने के लिए मन को सर्व प्रकार के बन्धनों से मुक्त करने का शिक्षण-प्रशिक्षण प्रदान करती है। मूल्य शिक्षा शान्ति के वायब्रेशन फैलाकर कक्षा के शैक्षिक वातावरण को मूल्यनिष्ठ बनाकर शिक्षार्थियों के कोमल और संवेदनशील मन को सकारात्मक दिशा में शिक्षित और प्रशिक्षित करती है। हमारा मन ही जीवन में सफलता और असफलता, खुशी और गम तथा आशा और निराशा की पृष्ठभूमि रचने वाला मुख्य कारक है, भले ही इनको रचने वाली परिस्थितियां, घटनायें और पात्र माध्यम के रूप में भिन्न-भिन्न दिखाई देते हैं। सबसे भ्रमपूर्ण स्थिति यह होती है कि हम 'माध्यम' को ही 'कारण' मानकर दु:खी और अशान्त होते रहते हैं। मूल्य शिक्षा यह स्पष्ट कर देती है कि जीवन में घटित होने वाली घटनाओं की पटकथा हमारे पूर्व कर्म-फल के अनुसार सुनिश्चित है। साक्षीद्रष्टा होकर जीवन में घटित हो रही घटनाओं को निष्पक्ष भाव से देखने से 'जीवनमुक्ति' का मार्ग प्रशस्त होता है। जीवन से सर्व प्रकार के मानसिक भय, तनाव, दबाव और भ्रम से मुक्त होकर आत्मनिष्ठ भाव से कर्म करने की कला सिखाने वाली शिक्षा ही मूल्य शिक्षा है। हमारे जीवन की सबसे बड़ी कला मन को सन्तुलित करने की कला है। जीवन को सूक्ष्म रूप से प्रभावित करने वाले सर्वमान्य कर्म के सूक्ष्म सिद्धान्तों की स्पष्ट व्याख्या करके मूल्य शिक्षा हमारे जीवन को उत्कृष्टता प्रदान करती है।

नैतिक शिक्षा और प्रेरक कहानियां मन में सकारात्मक भावों की तरंगें उत्पन्न करने में समर्थ तो होती हैं परन्तु हम सभी यह अच्छी तरह से जानते हैं कि तरंगों में स्थायित्व नहीं होता है। इसलिए प्रेरक कहानियों द्वारा कर्मक्षेत्र में उत्कृष्टता की गारंटी सम्भव नहीं है। चेतना के परिष्कार से ही मन में स्थायी रूप से सकारात्मक भावों का निर्माण होता है जिससे कर्म में उत्कृष्टता सुनिश्चित होती है। मनुष्य में जन्मजात अन्तर्निहित सात मूल गुणों के परिष्कार के लिए चैतन्य शक्ति की मूल स्रोत को आधार मानकर शिक्षा देने से ही शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करना सम्भव है। इसलिए मनुष्य की चेतना को शिक्षित करने वाली मूल्य शिक्षा को वर्तमान शिक्षा में सम्मिलित करने का क्रान्तिकारी कदम है। मूल्य शिक्षा से ही मनुष्य में अन्तर्निहित दैवी भावों को कार्य-व्यवहार में व्यावहारिक रूप से लाकर हम प्रेरक शिक्षकों और अनुशीलन शील विद्यार्थियों का निर्माण करने में समर्थ हो सकते हैं।

वर्तमान समय की मांग पूरा करने के लिए मूल्य शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार करने का यही सही वक्त है। सांसारिक विषयों के ज्ञान-विज्ञान ने अपने चरम उत्कर्ष को स्पर्श कर लिया है परन्तु मनुष्यता और कर्म में उत्कृष्टता की सर्वोच्चता को स्पर्श करने में अभी भी लम्बी मंजिल तय करना बाकी है। हमारे नीति-निर्माताओं को यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि यदि वे वर्तमान समय में मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्वीकार करते हैं तो उनका यह कार्य मानवता के नवनिर्माण और इस संसार को सुखमय बनाने की दिशा में महान परोपकारी कार्य होगा क्योंकि आत्मिक चेतना की शिक्षा शिक्षार्थियों में अन्तर्निहित मन की असीम शक्तियों और सद्गुणों से आत्म-साक्षात्कार अथवा आत्म-अनुभूति कराती है। वास्तव में, शिक्षा के अनुसार ही मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। वर्तमान समय में मनुष्य और समाज की जो अवस्था और व्यवस्था है वह मूल्य शिक्षा के अभाव में उत्पन्न विसंगतियों का परिणाम है। वर्तमान संसार में व्याप्त अज्ञानता और जड़ता के लिए समय और व्यवस्था को दोषी ठहराना न तो सही है और न ही समस्या का समाधान है क्योंकि जब ज्ञान का स्रोत ही अंधकार और अज्ञानता के काले बादलों से ढका है तो अंधकार तो फैलेगा ही। जीवन से अज्ञानता और जड़ता को समूल नष्ट करने के लिए आत्मिक प्रकाश ढकने वाले देह-अभिमान के आवरण से अज्ञानता का पर्दा हटाने के लिए राजयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण देकर विद्यालयों को साकार में मूल्यों का देवालय बनाया जा सकता है।

शिक्षा (Education) का दिव्य अर्थ

नीति वचनों तथा ईश्वरीय वाणी में मानव जीवन के व्यावहारिक सत्य का उद्घाटन करने वाली शिक्षा अंग्रेजी भाषा के एज्युकेशन (Education) का पर्याय है। इसके प्रत्येक अक्षर (Letter) का दिव्यार्थ निम्नलिखित है:

Excellence (उत्कृष्टता)

शिक्षा मनुष्य के अन्दर निहित दैवी भावों के प्रकाशन द्वारा जीवन में उत्कृष्टता लाकर मनुष्य को समर्थ बनाती है। आध्यात्मिक और मूल्य शिक्षा से 16 उत्कृष्ट मानवीय कलाओं को धारण करके मनुष्य देवत्व को प्राप्त कर सकता है।

Discipline (अनुशासन)

आन्तरिक और बाह्य अनुशासन से ही जीवन में महानता आती है। मन और बुद्धि में सन्तुलन द्वारा उत्कृष्ट कर्मों से ही मनुष्य जीवन और राष्ट्र की प्रगति के विकास के क्षितिज के नये द्वार खुलते हैं।

Understanding (समझ)

आध्यात्मिक ज्ञान से समझ विकसित होती है। समझने की शक्ति का विकास होने से परिस्थितियों को समझने, सत्य को परखने, उचित निर्णय लेने और श्रेष्ठ व्यवहार करने की शक्ति का विस्तार होता है। इससे संस्कारों का परिष्कार और जीवन में चेतना का संचार होता है।

Character building (चरित्र निर्माण)

चरित्र मनुष्य की अमूल्य पूँजी एवं जीवन में दिव्य गुणों, शक्तियों एवं सफलता की कुंजी है। आध्यात्मिक शिक्षा जीवन में श्रेष्ठ मानवीय गुणों और मूल्यों का विकास करके चरित्र रूपी पूँजी का निर्माण करती है।

Abilities (मानसिक दक्षता)

कर्मक्षेत्र में व्यावहारिक रूप से सफल होने के लिए विभिन्न मानसिक दक्षताओं का विकास आवश्यक है। ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग से श्रेष्ठ मानसिक दक्षताओं का विकास होता है। इससे हम श्रेष्ठ समाज के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं।

Transformation (परिवर्तन)

आध्यात्मिक शिक्षा से मनोवृत्तियों अथवा संस्कारों का दिव्यीकरण होता है। इससे कर्तव्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है। समय और परिस्थिति के अनुसार स्वयं में परिवर्तन करने से सफलता की मंजिल सदैव सहज होती है।

Integrity (एकात्मकता)

आध्यात्मिक शिक्षा विभिन्न धर्म, जाति, रंग, रूप, भाषा के भेद को मिटाकर समाज में एकता स्थापित करती है। इस शिक्षा से मनुष्य को स्वयं का सत्य परिचय मिलता है कि सभी मनुष्यों का यथार्थ स्वरूप ज्योतिर्बिन्दुस्वरूप एक जैसा ही है। इससे सभी प्रकार के भेदभाव समाप्त हो जाते हैं।

Optimism (आशावाद)

आध्यात्मिक शिक्षा मनुष्य के दृष्टिकोण एवं चिन्तन को सकारात्मक बनाती है। इससे जीवन में आशावादिता आती है। आशावादी बनने से जीवनी शक्ति प्रखर होती है तथा तन-मन स्वस्थ एवं निरोग रहता है। कार्यक्षमता में भी वृद्धि होती है।

Nobility (सज्जनता)

आध्यात्मिक शिक्षा से मानवीय मूल्यों का विकास होता है जिससे सज्जनता आती है। व्यक्ति सदा दूसरों का सहयोग और सेवा करने के लिए तत्पर रहता है। वास्तव में, मानव जीवन की गरिमा मानवता की सेवा में ही है।

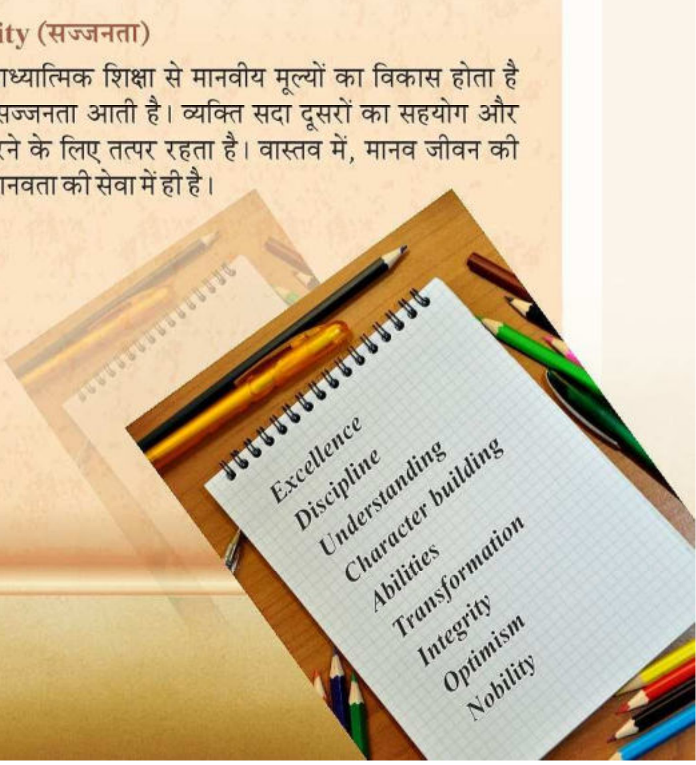

▶ डॉ. ब्र.कु. वेद गुल्यानी, हिसार

Be What You Are !

I often wonder whether people know why they do what they do. Man claims to be the most intelligent, most rational and resourceful creature on this globe of earth. But haven't you heard him apologizing for what he had said or done? You might have heard others saying or might have uttered these words yourself, "I actually did not mean to say that." We have often been advised by the wise that we should be careful of what we say or what we do so that it does not harm anyone, at least not ourselves. But are we really cautious?

It may look odd or even offensive if I said that the animals also are not mindful of what they do, nor do they learn from their past mistakes and sufferings. Measuring with this yardstick can we say that we human beings are better than those animals, not the stray or wild but even the domesticated? The objective conclusions and answers may be painful. But why is it so? Have we not learnt from experience, our education, guidance etc.?

No, it is not that. The problem with human beings is that they are human, social and cultured. Ironical, isn't it? Yes. We try to justify every action and non-action and thereby we become unnatural and impulsive. We do certain things because our job, our nature, our relations and even our aspirations force us to behave in that particular manner. We have our own justifications, our own norms and our own philosophy. This all makes our life so complex that we find ourselves trapped in multiple layers of bondage.

If only man knew his true and real-self. If only he knew of his being a Soul and performing a given role in the costume of this body, which does not demand of him to wear so many masks. In his effort to improve he tries to out-do the writer director of this drama i.e. the Supreme Soul and thus spoils the whole show.

Shouldn't we try to perform our natural self and enjoy the drama which aims to yield happiness and contentment to all?

खुदा के पास जाना है
खुदी को जानना होगा

फकत मेहमान चंद दिन का, बना कायनात का मालिक।
खज़ानों की रही चिन्ता, रूहानी जेब है खाली।।
यही इक धुन रही हर पल, क्या तेरा है, क्या मेरा है,
चैन-ओ-अमन न मिल पाये, सुकूं तेरा था बेमानी।।

मिली पलभर की जो खुशियां, उसी से दिल लगा बैठे।
उम्मीदें थी उजाला हो, दीए से घर जला बैठे।।
न हमराह मिला कोई, थी चाहत एक रहबर की,
भंवर में घिर गई कश्ती, ये उलझन दूर हो कैसे।।

मैं आइना भी बना कैसा, ये सूरत भी दिखी कैसी।
ये बिन बूंदों के बादल हैं, हो सेहरा में फिज़ां कैसी।।
बशर महबूब है लेकिन, तस्सवुर-ए-खुदा की चाहत है,
न दोज़क है, न जन्नत है, ये भला तकदीर है कैसी।।

न मंज़िल है, न मकसद है, यूं ही छिप जाएगा ये दिन।
यहाँ न दर्द मिट पाया, हुआ न सुकूं वहाँ मुमकिन।।
भटकना कभी तो रोकना होगा, कहीं तो ठहरकर सोचें,
जो खुदा के दिल में बसती थी, हुई क्यों ज़िंदगी मुश्किल।।

गुमशुदा चेहरा नकाबों में, उसे अब पहचानना होगा।
जो गफलत में गंवा बैठे, उसे अब जानना होगा।।
हकीकत ज़िंदगी की यूं, मिटाए मिट नहीं सकती,
खुदा के पास जाना है, खुदी को जानना होगा।।

डॉ. ब्र.कु. ममता, मेहसाना

मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम

गीत - भारत देश की महिमा महान...

मौन में बैठना और सोचना

सोचो, मैं किस देश का वासी हूँ... भारत देश कितना महान है... यहाँ की संस्कृति और सभ्यता पूरे विश्व में विख्यात है... भारत में ही भगवान आता है... भारत में ही सभी धर्मों को आदर भाव से देखा जाता है... भारत देवताओं की भूमि है... यहाँ सामाजिक, पारिवारिक एकता है... मेरे देश के लोग आपस में मिल-जुलकर रहते हैं... मुझे अपने देश पर गर्व है।

कविता

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलसितां हमारा।।

पर्वत वो सबसे ऊंचा, हम साया आसमां का।
वो संतरी हमारा, वो पासबां हमारा।। सारे जहाँ से अच्छा...

गोदी में खेलती हैं जिसकी हजारों नदियां।
गुलशन है जिसके दम से रश्के जीना हमारा।।

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दुस्तां हमारा।। सारे जहाँ से अच्छा...

प्रश्नोत्तरी

1. भारत हमारे लिए क्या है?
2. भारत की गोदी में कितनी नदियां हैं?
3. मज़हब क्या नहीं सिखाता है?
4. हिन्दुस्तान कैसा है?
5. देशप्रेम का कोई गीत, कविता या कहानी लिखिए।

देशप्रेम बढ़ाने के लिए चिंतन

- मैं भारत माता का बालक हूँ।
- मैं सच्चा देशभक्त हूँ।
- भारत का तिरंगा सबसे प्यारा है।
- राष्ट्रगान का मैं आदर करता हूँ।
- भारतीय संस्कृति और सभ्यता का चिंतन।
- भारत के महापुरुषों को याद करना। जैसे-

क्षेत्र - ऐतिहासिक : सम्राट अशोक, लक्ष्मी बाई, अकबर, शिवाजी, गांधी जी

धार्मिक : शंकराचार्य, महावीर, बुद्ध, गुरुनानक, प्रजापिता ब्रह्मा

साहित्यिक : वाल्मिकी, तुलसीदास, वेद व्यास, कबीर

गृहकार्य

1. विद्यार्थियों को भारत के धार्मिक उत्सव, त्यौहार तथा राष्ट्रीय त्यौहार के विषय में निबंध लिखकर लाने के लिए कहना।
2. किसी महापुरुष का एक शौर्य गाथा या गीत लिखना।

योगाभ्यास

मैं भारत देश का नागरिक हूँ... मेरा भारत परमात्मा की दिव्य अवतरण भूमि है... मेरे भारत को परमात्मा-पिता मेरे जैसी अनेक आत्माओं के सहयोग से स्वर्ग बनाता है... भारत संतों, महात्माओं की पुण्य भूमि है... भारत राम, कृष्ण, लक्ष्मी, नारायण जैसे देवात्माओं की जन्मभूमि है... मेरा भारत बुद्ध, महावीर जैसे पुण्य आत्माओं की भूमि है... मेरा भारत वेद व्यास, वाल्मिकी जैसे ऋषि-मुनियों की दिव्य भूमि है... मेरा भारत रानी लक्ष्मी बाई, भगत सिंह जैसे वीरों की जन्मभूमि है... गांधी जी जैसे महात्माओं की जन्मभूमि है... ऐसे श्रेष्ठ विश्व के अखण्ड राष्ट्र भारत की भूमि में मुझ आत्मा का जन्म हुआ है... मुझे अपने देश पर नाज़ है... मैं अपने देशवासियों के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा दिया हुआ भाईचारा, प्रेम, पवित्रता, सुख, शान्ति का संदेश लेकर आया हूँ... आइये, हम सब मिलकर भारत की संस्कृति और सभ्यता की महिमा करें... ओम शान्ति।

गीत - मेरे भारत की भूमि पर...

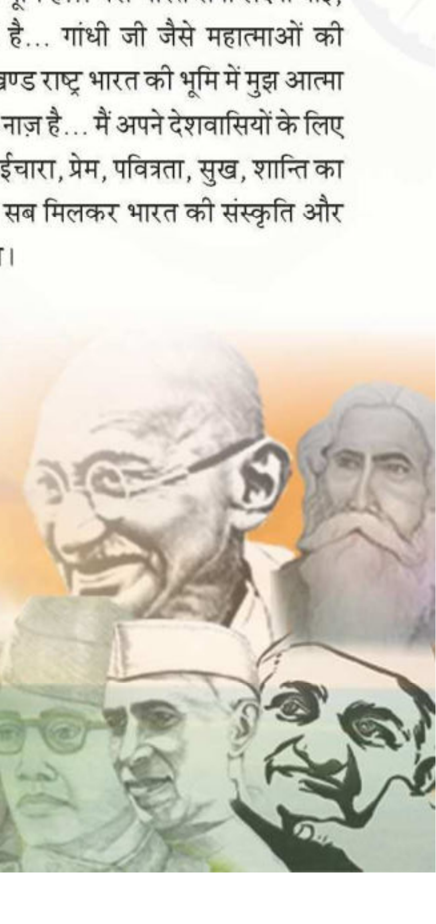

VALUE EDUCATION AND SPIRITUALITY

Brahma Kumaris Education Wing (RE & RF) offers through Collaboration

Annamalai University, Annamalai Nagar, Tamil Nadu

(Jurisdiction: India & Nepal) in 10 languages

Course
1. MBA in 'Self Management and Crisis Management'
2. M.Sc. in 'Value Education and Spirituality'
3. PG Diploma in 'Value Education and Spirituality'
4. PG Diploma in 'Values in Health Care'
5. Diploma in 'Value Education and Spirituality'

Address
B.K. Jayakumar, Co-ordinator
AU NODAL CENTRE
Brahma Kumaris, Vishwa Shanti Bhawan
Meenakshi Nagar, Behind P&T Nagar
Madurai - 625017 (TN)
Ph.: 0452 - 2640777, Fax : 0452 2640666
Mob.: +91 94422 68660, E-mail: bkeducationwing@gmail

Yashwantrao Chavan Maharashtra Open University, Nashik, Maharashtra

Jurisdiction: Maharashtra (Languages- Hindi, English & Marathi)

Course
1. Bachelor's Degree (B.A.) in 'Values and Spiritual Education'
2. Advanced Diploma in 'Values and Spiritual Education'
3. Diploma in 'Values and Spiritual Education'

Address
B.K. Vasanti, Co-ordinator, **YCMOU NODAL CENTRE**
Brahma Kumaris, Prabhu Prasad
Kala Nagar, Behind Akash Petrol Pump
Dindori Road, Mhasrul, **Nashik - 422004 (MH)**
Ph.: 0253 - 2629557, Mob.: +91 91582 17842
Email: bkeducationwingnashik@gmail.com

Vardhman Mahaveer Open University, Kota, Rajasthan

Jurisdiction: Rajasthan (Languages- Hindi, English)

Course
1. PG Diploma in 'Value Education and Spirituality'
2. Certificate Course in 'Value Education and Spirituality'

Address
B.K. Mukesh, Co-ordinator
VMOU NODAL CENTRE
Brahma Kumaris, Rajyoga Bhawan
Amrapali Marg, Vaishali Nagar, **Jaipur - 302021 (RAJ)**
Ph.: 0141-2354557, Mob.: +91 9214044474
Email: bkeducationwingraj@gmail.com

Dibrugarh University, Dibrugarh, Assam

Jurisdiction: Assam (Languages- Hindi, English)

Course
1. MBA in 'Self Management and Crisis Management'
2. M.Sc. in 'Value Education and Spirituality'
3. PG Diploma in 'Value Education and Spirituality'

Address
B.K. Binita, Co-ordinator, **DU NODAL CENTRE**
Brahma Kumaris, Vishwa Shanti Bhawan
Kumarian Siga, Raja Bheta, PB No. 139, Mohanghar
Dibrugarh - 768 008 (Assam)
Ph: 0373 - 2321399, Mob: +91 94351 30798
E-mail: dibrugarh@gmail.com

Ram Krishna Dharmarth Foundation University (RKDF), Bhopal, Madhya Pradesh

Jurisdiction: University Campus (Languages- Hindi, English)

Course
1. MBA in 'Self Management and Crisis Management'
2. M.Sc. in 'Value Education and Spirituality'
3. PG Diploma in 'Value Education and Spirituality'
4. 100 Marks Compulsory Paper on 'Values, Spirituality and Consciousness Development' in all UG, PG and Technical Courses

Address
B.K. Kiran, Co-ordinator, **RKDFU NODAL CENTRE**
Brahma Kumaris, 81, Golden Valley
Behind Sagar Complex, Kolar Road,
Bhopal - 462042 (MP)
Ph.: 0755 4251591, Mob.: + 91 94253 03630
E-mail: bkkiran@gmail.com

Karnataka State Open University, Mysore, Karnataka

Jurisdiction: All India (Languages- English, Kannada)

Course
1. Diploma in 'Value Education and Spirituality'
2. B.A. in 'Value Education and Spirituality'
3. M.A. in 'Value Education and Spirituality'

Address
B.K. Lakshmi, Co-ordinator, **KSOU NODAL CENTRE**
Brahma Kumaris, Gyan Prakash Bhawan
59/3, 2nd Main, Yadavagiri
Behind Akashvani, **Mysore - 570020 (KAR)**
Ph.: 821-2512227 / 2517214, Mob.: + 91 9880283752
E-mail: yadavagiri.mys@bkivv.org

Tamilnadu Teachers Education University, Chennai, Tamil Nadu

Jurisdiction: Tamilnadu Campus (Languages- English, Tamil)

Course
1. PG Diploma in 'Value Education and Spirituality'

Address
B.K. Muthumani, Co-ordinator, **TTEU NODAL CENTRE**
Brahma Kumaris, Door No 15, Flat No 32, 4th Floor,
Dev Apartments, 1st Main Road
Kasturibai Nagar, Adyar, **Chennai - 600020 (TN)**
Ph.: 044-24426660, Mob.: + 91 9940618122
E-mail: adyar.che@bkivv.org

University of the West Indies, Trinidad & Tobago *(Jurisdiction: Trinidad & Tobago)*

Ganpat University, Mehsana, Gujarat *[Jurisdiction: University Campus (Language- English)]*

Sri Ramaswamy Naidu, Memorial College, (Autonomous), Sattur, TN *(Jurisdiction: Memorial College, Sattur, TN)*

1. काठमाण्डू (नेपाल)। मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता पाठ्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राज दीदी, नेपाल, प्रो. डॉ. चिंतामणि, प्रो. डॉ. रमेश कुमार तथा अन्य। **2. शान्तिवन (राजस्थान)।** कर्नाटक खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एम.जी. कृष्णनन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी रतनमोहिनी जी तथा अन्य। **3. अकोला (महाराष्ट्र)।** विदर्भ जूनियर कॉलेज टीचर्स एसोसिएशन, अकोला में आयोजित मूल्य शिक्षा कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राज्य मंत्री डॉ. रंजीत पाटिल। साथ हैं प्राचार्य डॉ. सुभाष भदंगे, डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि तथा अन्य। **4. शान्तिवन (राजस्थान)।** पर्सनल कॉन्टेक्ट प्रोग्राम का दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु. शीलू बहन, डॉ. आर.पी. गुप्ता तथा अन्य। **5. शान्तिवन (राजस्थान)।** फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय। साथ हैं ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु. पांड्यामणि तथा अन्य। **6.वैंगलुरू (कर्नाटक)** मुख्यमंत्री सिद्दारमैया से सन् 2014-15 के स्टेट सिविलियन अवार्ड **'बेस्ट प्रिंसिपल'** प्राप्त करने के पश्चात् शिक्षा प्रभाग के सदस्य ब्र.कु. महेन्द्र तथा अन्य।

Education Wing HQs. Office
B.K. Mruthyunjaya, Vice-Chairperson, Education Wing
Brahma kumaris, Value Education Centre
Anand Bhawan, 3rd Floor, Shantivan, **Abu Road-307510 (Raj.)**
E-mail: educationwing@bkivv.org
Education Wing, National Co-ordinators Office
B.K. Dr. Harish Shukla, National Coordinator, Education Wing
Sukh Shanti Bhawan, Kankaria, **Ahmedabad-380022 (Guj.)**
Mob. No. : +91 9427638887 **Fax :** 079-25325150
E-mail: harishshukla31@gmail.com

To,